" हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास एक अनुशीलन "

डॉ. मंत्री रामधन आहे

हिन्दी विभाग- शोध निर्देशक

तुळजाभवानी महाविद्यालय, तुळजापूर जिल्हा धाराशिव

Email: - drmantri2@gmail.com

उपन्यास जीवन को समझने का यह सबसे कारगर रचना प्रकार है। शक्ति के साहित्य की एक गधमय विधा का नाम उपन्यास है। इसमें समाज, समय एवं मानव जीवन प्राय: सबसे अधिक व्यापकता से चित्रित होता है। उपन्यास मानव जीवन को समग्रता का यथार्थ चित्र है। गदय साहित्य की मूख्य विधा है। आधुनिक युग की देन है। उपन्यास यथार्थ मानव-अनुभवों एवं सत्य का कई घटनाएँ प्रसंग चित्रण होता है। उपन्यास में इतिहास, रामायण, महाभारत, वर्तमान, पुराने, कल्पना पात्र-कथा, सामाजिक समस्या, युध्द विनाश के रूप में लिखा जाता है। युग की गतिशील पृष्टभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवनी की एक पूर्ण व्यापक झाँकी प्रस्तुत करनेवाला गदय काव्य उपन्यास है। अतीत रुप में घटित रुप में ही वर्णन होता है। उपन्यास को पाठक समय का कोई प्रतिबन्ध नही। प्रमुख ध्येय वास्तविकता है। वर्तमान जीवन की जटिलता और सूक्षमता को सही रुप में अभिव्यक्ति देनेवाली यह एकमात्र विधा है। १९ सदी में गद्य-पद्य में साहित्य प्रचलित हुआ। छोटी बडी कहानी (कथा) सुनने सुनाने से सांस्कृतिक परंपरा भारतीय जीवन में खूब प्रचलित रही है। जैसे रानी-सारंगा, सदा बृज कथा लोकजीवन की निधियों रही है। उपन्यास को विदेशी विधा कहा जाता है। उपन्यास शिक्षितों का माध्यम है। मुंशी प्रेमचंद कहते हैं "कलम का कमाल दिखाने का जितना अवसर उपन्यास में मिल सकता है उतना साहित्य की और किसी विधामें नहीं मिल सकता" उपन्यास मुख्यत: मानव के संपूर्ण विकसित जीवन का ही चितरा है। वह जीवन की नाडी परिक्षा करता है। वह कथात्मक गद्य नही है, वह मानव के जीवन का गद्य है। मोनियर विल्यम ने संस्कृत अंग्रेजी कोश में उपन्यास को 'अभिकथन' कहा है।

वर्भारतीय साहित्य में उपन्यास शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से दृष्टिगत होता है। सर्व प्रथम उपन्यास शब्द का प्रयोग संस्कृत भाषा में प्रयुक्त हुआ है। उपन्यास शब्द संस्कृत के "अस" धातू से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है रखना इसमें "उप" और "नि" उपसर्ग है तथा धत्र प्रत्यय का प्रयोग है। (उप नि अस धत्र उपन्यास) हिन्दी साहित्य कोश में "उपन्यास शब्द उप समीप तथा न्यास थाती के योग से बना है। ई. पू. दूसरी-तिसरी शताब्दी के लगभग इस शब्द का प्रयोग होने लगा था। आचार्य भामह 'काव्यालंकार' में स्थापना के अर्थ में छठी शताब्दी में इस शब्द का प्रयोग किया है। उपन्यास का बंगला में दो बार प्रयोग हुआ। प्रथम १८५६-५७ में ऐतिहासिक उपन्यास के नाम से और दूसरी बार १८६१ में एक अद्भुत उपन्यास के रुप में। १८६४ में बंगाल की पत्रिका 'बंगदर्शन' पत्रिका में उपन्यास शब्द का प्रथम प्रयोग किया और हिन्दी में १८७१ मनोहर उपन्यास नाम में शब्द प्रयुक्त हुआ। संस्कृत में ८ सदी में बाणभट्टने (कादम्बरी) यह उपन्यास है ऐसा माना है। मराठी में उपन्यास को 'कादम्बरी' कहते है । इसमें कोई अर्थ नही मानते है। कुछ विद्वान 'कादम्बरी' को भारत का पहला उपन्यास माना है। अंग्रजी में उपन्यास को (नॉवेल) इसी की वजह पर गुजराती में उपन्यास को (नवलकथा) कहते है। दोनों में नया अर्थ निहित है। तब यह विधा नयी थी। भारतीय तथा पाश्चात्य मनीषियों ने उपन्यास की परिभाषा विभिन्न दृष्टियों से की है। एक ऐसी विधा है, जिस में लोकहित की भावना अन्यविधाओं से कलात्मक एवं सशक्त रुप से उभरी है। क्लारा रीव कहते है "उपन्यास यथार्थ जीवन तथा तत्कालीन सामाजिक व्यवहार का चित्र है।"" राल्फ फाक्य ने कहा है "उपन्यास केवल गद्य लिखी हुई कथा नही है। मानव जीवन की विविध सर्वांगीण अभिव्यक्ति है।"" पंडित जवाहरलाल नेहरु ने लिखा है। "महान उपन्यास हमेशा आदमी को सोचने की प्रेरणा देते है, क्योकि वे जिन्दगी की ऐसी तस्वीर है जो बडे दिमागों ने खीची है।"" नाट्यशास्व में उपन्यास को प्रसन्नता प्रदायक कृति

माना गया है "उपन्यासःप्रसाद नम।" "डॉ. श्यामसुन्दर दास ने उपन्यास मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"" जीवन के विविध पक्षों समस्याओं का चित्रण उपन्यास में किया जाता है। उपन्यास की लोकप्रियता और सर्वाधिक महत्त्व का मुख्य कारण यही है की प्रमुख ध्येय वास्तविकता है और व्यक्ति ही सबकुछ होता है।

उपन्यास का उद्देश है की उपन्यास जीवन की झाँकी देकर उसकी व्याख्या करना होता है। राष्ट्रीय भावना को जागृत करता है। वर्तमान और समाज के (जीवन) को प्रेरणा देता है। उपन्यास की प्रमुख प्रवृत्तियों में उपन्यास गद्य की सबसे सशक्त विधा है। यह कथात्मकता में बेजोड है। पुरे जीवन की कथा कहने की क्षमता से संपन्न है। पात्र, कथा असीमित होते है यह स्वातंत्र प्रकृति की रचना है। रस, अलंकार आदि का कोई बंधन नही। किसी भी व्यक्ति के लिए सहज रुप में से पठनीय होता है। आकार-प्रकार के बंधनों से मुक्त होता है। उपन्यास मध्यवर्ग के जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। कथा के आधार क्षेत्र असीम होते है। किसी भी जीवन दर्शन एवं यथार्थ को व्यक्त करने में सक्षम होता है। उपन्यास के छे अंग (प्रकार) है। कथानक, चरित्र चित्रण, कथोपकथन, देशकाल या वातावरण, शैली, उद्देश आदी। हिन्दी का पहला उपन्यास कौनसा था इसमें भी मतभेद है। आचार्य रामन्द्र शुक्ल ने श्रध्दाराम फुलोरी- 'भाग्यवती' (१८७७) वही शुक्ल जो ने लाला श्रीनिवासदास 'परिक्षा गुरु' (१८८२) हजारी प्रसाद दिवेदी ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र 'पूर्ण प्रकाश', तो डॉ. श्रीकृष्णलाल ने 'चन्द्रकान्ता' (१८८८) को हिन्दी का प्रथम उपन्यास माना है।

उपन्यास का विकास सर्व प्रथम यूरोप से माना जाता है। सर्व प्रथम उपन्यास का प्रचार इटली से माना जाता है आधुनिक युग में गद्य के अत्याधिक विकास कारण आधुनिक काल को गद्यकाल नाम से सम्बोधित किया जाता है। "आधुनिक उपन्यास का विकास युरोप में हुआ। भारत में नहीं।"8 युरोप में उपन्यास का विकास एक आधुनिक घटना है। १७/१८ सदी में उपन्यास साहित्य विकासित हो चुका था। किन्तू हिन्दी में १९ सदी में विकासित हुआ। इंग्लंड के सरफिलीप सिडनी, जॉन बुनियम, डेनियल ने सर्व प्रथम महत्वपूर्ण उपन्यास की रचना की। उपन्यास के क्षेत्र में सर्व प्रथम किशोरीलाल गोस्वामी का आगमन महत्वपूर्ण है। (६५) सामाजिक, जासूसी, ऐतिहासिक उपन्यासों का निर्माण किया। उपन्यासों में सर्वाधिक लोकप्रियता देवकीनंदन खन्त्री को प्राप्त हुई। आधुनिक हिन्दी उपन्यास की परम्परा का सुत्रपात प्रेमचंद से ही होता हे। "प्राचीन काल में जो महत्व महाकाव्य का था एलिजाबेथ और विक्रमादित के युग में जो महत्व नाटक का था। उससे कही अधिक महत्य आधुनिक युग में उपन्यास को प्राप्त है।" हिन्दी उपन्यासों का क्रम समझने के लिए प्रेमचन्द पूर्व युग, प्रेमचन्द युग और प्रेमचंदोत्तर युग वर्गों में विभाजित कर लेना अधिक सुविधाजनक होगा। प्रेमचन्द पूर्व युग सन १८८२ से १९१८ ई. तक माना जाता है। इस काल में अंग्रेजों का आगमन हो चुका था समाज के इस सम्भ्रान्त अवस्था में उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण होना संभव नहीं था। इस युग में श्रीनिवास दास, बालकृष्ण भट्ट, गहमरी, किशोरीलाल गोस्वामी, श्रध्दाराम फुलौरी, देवकीनन्दन खत्री, राधाचरण, जगमोहनसिंग, व्यास, उपाध्याय आदि प्रमुख उपन्यासकार थे। भारतेन्दु युगीन उपन्यासकारोने बंगला और अंग्रेजी से प्रेरणा लेकर विविध विषयों पर लेखन किया। इसयुग में सामाजिक उपन्यासों में श्रध्दाराम फुलौरी- 'भाग्यवती', लाला श्रीनिवासदास- 'परिक्षागुरु' (१८८२) आदि 'परिक्षा गुरु' अपने समकालीन मध्यवर्ग समाज और देश दशा का विस्तृत परिचय देता है।" इसकाल में सामाजिक दृष्टि से नीति एवं चरित्र सम्बान्धि परम्परागत समस्याओं पर अधिक बद दिया है। ऐतिहासिक उपन्यासों में किशोरीलाला गोस्वामी 'आदर्श रमणी', 'आदर्श बाला', 'रजिया बेगम', 'तारा', 'राजकुमारी', 'लवंगलता' आदि। "उपन्यास लेखको में किशोरीलाल गोस्वामी का वही स्थान है, जो नाटकारो में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का है। 'गंगा प्रसाद गुप्त- पृथ्वीराज चौहान, श्यामसुन्दर वैध-पंजाब रतन', 'मधुरा' प्रसाद शर्मा- 'नूरजहाँ बेगम' आदि। इन ऐतिहासिक उपन्यासों में रोमांचकारी घटनाओं की सृष्टिकर इन्हे मनोरंजन बनाया गया है। तिलस्मी उपन्यासों में बाबू देवकीनन्दत खत्री को लोकप्रियता प्राप्त हुई। 'चन्द्रकान्ता' (१८९१) 'चन्द्रकान्त संतती', 'नरेन्द्र' मोहीनीख हरे कृष्ण जौहर 'कुसुमलता', शंकर दयाल श्रीवास्तव 'मदन मंजरी' आदि। यूरोप से बंगला में आगमन विध जासूसी उपन्यासों की नीव डालनेवाले गोपालराम गहमरी- 'हीरे का मोल', 'अद्भूतलाश', 'खूनी कौन है', 'आनुमती', 'सकटी लाश', गुप्तचर नेमा रामप्रसाद- 'काला चाँद', रामलाल वर्मा-मेहंदी का दाग, 'चालक चोर', जासूसी उपन्यासों का निर्माण किया गया। अनुदित उपन्यासकारों में क्रितीका प्रसाद खत्री- 'इला', 'प्रमिला', रामकृष्ण वर्मा-चितोड चातकी, बंकिमचन्द्र दुर्गेशनन्दिनी, इन्दिरा, डेनियल डिफो- 'रोबिन्सन' कुसा (१८६०) विश्व का अनुदित पहला उपन्यास है। भारतेन्दु- 'पूर्ण प्रकाश', 'चन्द्रप्रभा' मराठी से अनुवाद किया। उर्दू, मराठी, गुजराती, अंग्रजी भाषा के अनेक उपन्यासों का अनुवाद किया गया इस युग के उपन्यास जीवन यथार्थ को न जोडनेवाले थे।

व्दिवेदी युगीन उपन्यास साहित्य ने जनता की अभिरुची को अपार संतोष पहुँचाया और मनोरंजन किया। सामाजिक उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी 'नवसमाज', 'पुर्नजन्म', 'लीलावती', 'चपला' (१९०३) 'अंगूठी का नगीना', 'मेहता लज्जाराम धूर्त रसिकलाल', 'आदर्श हिन्दू', 'आदर्श दम्पति', ब्रजनन्दन सहाय- राधाकांत, राजेंद्र मालती, गोपालराम गहमरी 'देवरानी जेटानी', 'शंकरलाल-प्रेम का पूल', अयोध्यसिंह उपाध्याय. 'अधखिला फुल' आदि। ऐतिहासिक उपन्यासों में किशोरीलाल गोस्वामी 'सुलतान रजिया बेगम', 'माल्लिका देवी', 'विरपत्नी' जयरामदास गुप्त- वीरपत्नी, जयरामदास गुप्त- 'काश्मीर का पतन', 'रंग में भंग', 'जयनती प्रसाद- 'पृथ्वीराज चौहान', मायारानी' में घटनाओं पर अधिक बदल दिया गया है। व्दिवेदीकाल में जासूसी उपन्यासों में कल्पना ही कथा का मूलाधार है। पाठक के मन में उत्सुकता, रोचकता उत्पन्न करना ही उपन्यासकार का ध्येय रहा है। हरे कृष्ण जोहर- 'मायामहल, 'कमल कुमारी', देवकीनन्दन खत्री- 'चन्द्रकान्ता', 'कटोरा भरा खून', गोस्वामी- 'खुनी औरत के सात खून', गहमरी 'सरकाटी लाश', 'जासूस पर जासूसी', 'जासूस चक्कर में', 'रुप सन्यासी', हरे कृष्ण 'कमाल कुमारी', दुर्गा प्रसाद 'काला चोर', 'माया', आदि। इन रचनाओं कारण लोगों के मन में साहित्य पढ़ने को रुचि अधिक निर्माण हुई। अनुचित अंग्रजी, मराठी, हिन्दी, उर्दू, बंगला भाषाओं से उपन्यास का अनुवाद किया गया। रहौतदास- प्रतापनारायण-युगलागुरीय, राधाकृष्णदास-स्वर्णलता, रवीन्द्रबाबू-आँख की किरकिवी, देवकीनन्दन सिंह-'खोयी हुई' 'दुलहिन', 'अनुही बेगम', रामचन्द्र वर्मा 'छत्रसाल', अशोक, लज्जाराम शर्मा- 'कपटी मित्र' आदि। इस युग के उपन्यासों में औपन्यासिक कलात्मकता का अभाव है। तिलिस्मी मनोरंजन की प्रधानता दिखाई देती है। यथार्थ की अपेक्षा कल्पना की और अधिक रुझान है।

प्रेमचन्द युग में हिन्दी उपन्यास ने क्रांतिकारी मोड लिया। सच्चे अर्थ में प्रेमचंद युग प्रवर्तक और मौलिक उपन्यासकार है। वास्तविक उपन्यास का श्री गणेश इसी युग में हुआ। जिस प्रकार गोको मदर को लिखकर महान हो गये, उसी प्रकार प्रेमचन्द ने गोदान की रचनाकर अमर ख्याति अर्जित की है। ग्रामीण समाज, सामाजिक कुरितियाँ, धार्मिक पाखण्ड, वेश्या समस्या, भारतीय जन जीवन तथा समाज के विभिन्न वर्ग का लेखन यचार्थ और आदर्शवाद के रुप में चित्रित किया है। यह युग नारी जागरण का युग है। उनका पहना उपन्यास 'सेवासदन' (१९१८) में वेश्या गमन कुरीतियों पर प्रहार किया है। 'वरदान', में प्रेम और अनमोल, 'प्रेमाश्रय' ग्रामीण समस्या, किसान जनीन्दार संघर्ष, 'रंगभूमि', में राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रष्टभूमि, 'कायाकल्प', में पुर्नजन्मवाद, 'निर्मला', में अनमेल विवाह समस्या, 'प्रतिज्ञा' में विधवा समस्या, 'गबन', में आभूषण की लालसा, 'कर्मभूमि', में राजनीतिक जागृति का सजीव चित्र, 'गोदान' (१९३६), कृषक जीवन का औपन्यासिक दस्ताविज है। 'प्रसाद- कंकाल', 'तितकी', 'वरावती', बेचन शर्मा- 'दिल्ली का दलाल', वृन्दावनलाल वमा 'गढ़ कुण्डार', 'विराट की पदमिनी', भगवतीचरण- 'तीन वर्ष', 'चित्रलेखा', चतूरसेन शास्त्री- 'हदय की प्यास', 'सोना और खुन', कोशिका-'माँ', 'भिखारीनी', शिवपूजन सहाय- 'दोहांती दुनियों आदि। इस युग के उपन्यासकारो पर मार्क्स, टालस्टाय, गांधी का वैचारिक प्रभाव पडा है। "प्रेमचंद युग में प्रेमचंद के साथ-साथ उपन्यास साहित्य में जो समान सापेक्षता आयी, वह उनको सबसे बड़ी देन है। प्रेमचन्दोत्तर युग में फ्रायड का मनोविश्लेषण एवं योनवाद और मार्क्स व्दन्दात्मक भौतिकवाद दो प्रमुख शक्तियों सक्रिय रही है। वर्ग शोषण का विरोध इस युग के उपन्यासों में दिखाई देता है। प्रसिध्द उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा 'टेढे मेढे रास्ते', 'चित्रलेखा', 'भूले बिसरे चित्र', यशपाल 'अमिता', 'व्दिव्या', 'दादा कामरेड', जैनेंद्रकुमार 'त्यागपत्र', सुनिता, 'अज्ञेय शेखर एक जीवनी', नदि के व्दिप 'अपने अपने अजनबी',इलाचन्द्र जोशी- 'लज्जा, 'पदे की रानी, 'प्रेम को छाया, 'जहाज का पंछी', रागेय राघव 'मुदों का टीला', 'चीवर', 'हुजूर', रेणू, 'मैला आँचल', धर्मवीर भारती- 'सूरज का सातवा घोडा', 'गुनाहों का देवता', अश्क 'गिरती दिवारे", 'गरम राख', नागर-बूंद और समुद्र', महाकाल', ग्रामांचल उपन्यासों में नागार्जुन चरन के बेटे, की रेणू 'परती परिधान', मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में देवराज 'अजय की डायरी', निर्मल वर्मा 'ये दिन', सामाजिक उपन्यासों में राजेन्द्र यादव 'प्रेत बोलते है', 'उखड़े हुए लोग', सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 'सोया हुआ जल', आधुनिक बोध के उपन्यासों में मोहन राकेश 'अन्धेरे बंद कमरे', 'न आनेवाला कल', कमलेश्वर 'डाक बंगला' आदि इस युग में जीवन यथार्थ के साथ वैयक्तिकता को प्रधानता दी है। परिच्छद साठोत्तरी उपन्यासों में नवीन समाज के दर्शन होते हैं। इस काल के साहित्य में महानगरीय सभ्यता, परिवर्तित परिवेश तथा कुण्ठा, विद्रोह की अभिव्यक्ति हुई है। ग्राम, नगर, महानगर के त्रिस्तरीय परिवेश में उपलब्ध होती है। इस युग के सर्वश्री कमलेश्वर-डाक बंगला १९६२, लौटे हुए मुसाफिर, शिवप्रसाद सिंह 'अलग-अलग वैतरणी', राकेश 'अन्तराल', श्रीलाल शुल्क 'राग दरबारी', राही मासूमरजा- 'आधा गाँव', रामदरश मिश्र 'सूखता हुआ तालाब', 'जल टूटता हुआ', भीष्म साहनी 'कडियों", 'तमस', मनू भण्डारी' आपका बण्टी', 'महाभोज', जगदम्बा प्रसाद 'मुरदाघर', कृष्णा सोबती 'मित्रो मरजानी', उपा प्रिगनंदा लाल खम्भ 'जिन्दगीनामा',

उपास्सिंबदा 'पचपन खम्भेकाल विवारी', 'रुकोगी नही राधा', मणि मधुकर 'पिंजरे में पन्ना', 'सफेद मेमने', 'पत्तों की बिरादरी', 'शिवानी' 'भैरवी', 'कंजा', 'विषकन्या', 'अतिथी', भगवतीचरण वर्मा - 'सबहि नचावत राम गोसाई', यादवेन्द्र शर्मा 'एक और मुख्यमंत्री', नागर- 'मानस का हंस' आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी- 'पुनर्नवा आदि। साठोत्तरी युग के उपन्यासकार आधुनिक मानव से साक्षात्कार कराते है। इस युग के उपन्यासों में एक नये समाज के दर्शन होते है।

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रुप में कहा जा सकता है की हिन्दी का उपन्यास साहित्य प्रत्येक दृष्टि से विशाल, व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण है। हिन्दी का प्रारम्भिक उपन्यास घटना प्रधान है। अनेक मनोरंजन प्रधान, तिलस्मी, ऐय्यारो, जासूसी उपन्यास लिखे गये। प्रेमचन्द ने सामाजिक चेतना जागृती का अभाव था। प्रेमचन्द ने सामाजिक यथार्थ की पहचान को उत्कर्ष पर पहुंचा दिया। प्रेमचन्दोत्तर युग चिन्तन प्रक्रिया का वैज्ञानिक युग है। इस युग के उपन्यासकारों का प्रमुख ध्येय व्यक्ति और समाज तथा उनके आपसी सम्बन्धों को नयी जीवन दृष्टि के आलोक में शोध-विश्लेषणा करना रहा है। हिन्दी उपन्यास विभिन्न युगीन देशी-विदेशी उपन्यास साहित्य से प्रेरणा ग्रहण करता हुआ मश विकसित हुआ है। वर्तमान में हिन्दी उपन्यास का विकास हो रहा है। उसमें नवीन विकास एवं रचना शिल्पको अपनाया जा रहा है। इस रुप में हिन्दी का वर्तमान उपन्यास साहित्य जहाँ एक और कोमलतम स्पदनों और सुक्ष्म अनुभूत्यात्मक अभिव्यंजना से युक्त वहाँ दूसरी ओर नवीनतम शिल्प रुपों का बोध कराते हुए हिन्दी उपन्यास को भावी उपलब्धियों के प्रति पाठकों को आशावान बनाता है। इस दृष्टि से हिन्दी उपन्यास साहित्य का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल है।

संदर्भ ग्रंथ

१. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी डॉ. रेवा कुलकर्णी, पृष्ठ ३१

२. फणीश्वरनाथ रेणू के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन प्रा. अशोक वामनराव धूलधुले, पृष्ठ- ९

३. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना डॉ. पीताम्बर सरोदे, पृष्ठ- २७

४. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना कृष्णकुमार बिस्सा - पृष्ठ - १०

५. हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास- जय किशन प्रसाद खण्डेलवाल, पृष्ठ - ६९९

६. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना डॉ. पीताम्बर सरोदे, पृष्ठ- २५

७. आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास डॉ. बेचन, पृष्ठ २४

८. आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास डॉ. बेचन, पृष्ठ ४८

९. आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भव और विकास डॉ. बेचन, पृष्ठ ५०

१०. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी डॉ. रेवा कुलकर्णी, पृष्ठ - ३१

११. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना कृष्णकुमार बिस्सा पृष्ठ - १४

१२. हिन्दी उपन्यास का विकास डॉ. सरदार सिंह सूर्यवंशी पृष्ठ ७५

१३. साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक चेतना कृष्णकुमार बिस्सा पृष्ठ १६

१४. वेबसाईड इन्टरनेट